भक्ति और विश्वास

रामनाथ
राजसं., रूड़की

एक नारायण जी के भगत थे। बड़े भोले भगत थे। बहुत दिन तक पूजा-पाठ, विष्णुसहस्त्र नाम करते रहे। पूजन करते रहे। भगवान दर्शन दे दो, भगवान दर्शन दे दो। भगवान नहीं आये। अलमारी थी। दो खण्ड की तो बोले-देखो अगर तुम कल तक नहीं आये तो तुमको हम ऊपर उठा के रख देंगे। हनुमान जी को लाके उनकी पूजा करेंगे। वे जल्दी दर्शन दे देंगे।

दूसरे दिन भगवान नहीं आये तो ऊपर रख दिया, विष्णु को। हनुमानजी ले आये। सामने रख लिया। उनकी पूजा करने लगे। अब जब अगरबत्ती जलायी तो धुँआ तो ऊपर ही जायेगा कि नहीं ? तो धुँआ सीधे वहीं जाये नारायण के पास। क्योकि ऊपर रखे हुए थे। तो भोले भगत कहता है– "देखो, नारायण यह बड़ी गलत बात है। दर्शन देने आये नहीं और अगरबत्ती का धुँआ जबरदस्ती आप सूंघ रहे हैं। हनुमानजी को मिल नहीं रहा। इसलिये या तो दर्शन दे दो नहीं तो धुंआ सूंघना बंद करो। पंखा लगाकर उसका रूख दूसरी ओर मोड़ देता है और कहने लगा तुम्हें हम सूंघने नहीं देगे अगरबत्ती और नहीं तो तुम दर्शन दे दो और ये पंखा हटाये तो फिर धुँआ सीधा वहीं जाये। बोले तुम ऐसे नहीं मानोगे। मैंने प्रतिज्ञा की है तुमको सूंघने नहीं दूँगा अगरबत्ती का धुँआ, जब तक दर्शन नहीं दोगे।"

बोले ''तुम्हारी नाक में रूई ठूंस दूँगा दोंनो नासिकाओं के छिद्र में। फिर देखूँ तुम कैसे सूंघते हो। दो गोलियाँ बनाई रूई की और भगवान विष्णु की मूर्ति में नाक के अंदर और जैसे रूई अन्दर ठूँसी न? नाक में वैसे ही भगवान विष्णु प्रकट हो गये। दर्शन हो गया। भगत कहता है मुझे क्या पता था कि तुम रूई ठूँसने में आते हो नहीं तो पहले ही ठूँस देता तुम्हारे नाक में रूई। तो कम से कम दर्शन तो देते इतना चक्कर तो नहीं पड़ता। "भगवान ने कहा भगत! न तो मैं तेरी पूजा करने से आया और न रूई लगाने से आया। मैं तो केवल इसलिये आया कि तुझे यह विश्वास है कि 'इस मूर्ति में भगवान है और वे धुँआ सूंघ रहे हैं। यह जो तेरी एक दृढ़ भावना थी उस भाव से मैं प्रकट हुआ दर्शन देने के लिये।"

तो साथियों ऐसे ही आपने कभी धन्ना जाट की कथा सुनी होगी। पंजाब की तरफ तो बहुत प्रसिद्ध है। छोटा सा बालक था। नौ-दस बरस का। जाट लोग पढ़े-लिखे नहीं होते थे। अब जाट काफी पढ़-लिख गये हैं। चौधरी चरण सिंह वे भी जाट ही हैं न? प्रधानमंत्री जी बन गये थे आपके देश के। उन दिनों पढ़ाई लिखाई बहुत कम थी, खासकर देहातों में। बच्चा कुछ नहीं जानता। एक दिन कोई पण्डित जी उनके घर आकर ठहरे गये हरिद्वार जाने वाले। भगवान का पूजन किया। प्रसाद पाया। पहली बार देखा। पूछा 'पण्डितजी यह क्या है? 'भगवान का पूजन है।' पूजन से क्या होता है। भगवान दर्शन देते हैं। दर्शन होने से क्या मिलता है? बोले 'भक्त का सारा काम भगवान करते हैं। भक्त बैठा रहता है।' धन्ना ने कहा 'ये तो बड़ी अच्छी बात है। हमको भी भगवान दे दो। भगवान प्रकट होंगे तो भगवान बछड़े चराएँगें हम बैठे रहा करेंगे। बड़ी अच्छी युक्ति है। एक भगवान हमको दे दो।'

अब पण्डितजी ने सोचा कि इसे भगवान का पता ही नहीं। मैं अपनी शलिग्राम कैसे दें दूँ? लेकिन बच्चा रोने लगा। एक युक्ति पण्डितजी के दिमाग में आयी। 'अच्छा बेटा सुबह आना। भगवान देंगे तुम्हें। सड़क से

एक गोल पत्थर उठा के लाके रख लिया सिंहासन पर और सुबह-सुबह वह रात भर सोया नहीं। कब प्रात:काल होगा। कब भगवान मिलेंगे। पूजन करूँगा, भगवान दर्शन देंगे। भगवान बछड़े चरायेंगे। मैं आराम से बैठा करूँगा। जैसे भगत आया, धन्ना को पत्थर दे दिया।

अब देखो- देने वाला दे रहा है पत्थर समझ के और लेने वाला ले रहा है भगवान समझ के कि ये मुझे भगवान मिल गये। कथा लंबी है समय थोड़ा है। संक्षेप उसका यही था कि पण्डितजी ने कहा इनको खिला के खायें। नहला दो। चन्दन, तुलसी चढ़ा दो और इन्हें खिलाके तब खाया करो। बाजरे की दो रोटियाँ लेके बैठ गया। बछड़े चराता हुआ। आओ, भगवान रोटी खाओ मुझे भूख लगी है। भगवान इतने सस्ते हैं? बड़े-बड़े ज्ञानियों, ध्यानियों को न मिलने वाले तेरे बाजरे की रोटियाँ खाने आ जायेंगे भगवान। खाओ भगवान। मैने वचन दिया है तुम्हें खिलाके खाऊँगा। एक दिन दो दिन, चार दिन, सात दिन गुजर गये। धन्ना ने रोटी नहीं खायी। कंठ में प्राण आ गये। प्राण निकलने लगे। कहने लगा मरने का दुख तो नहीं है भगवान। गुरूजी पूछेंगे तो क्या जवाब देंगे ? एक बार तो खालो, थोड़ा सा खालो फिर मैं मर जाऊँगा।

मुख सूख गया यदि रोते हुए, फिर अमृत ही बरसाया तो क्या?
भवसागर में जब डूब चुके, तब नाविक नाव को लाया तो क्या?
दृग् लोचन बन्द हमारे हुए, तब निष्ठुर तू मुस्काया तो क्या?
जब जीवन ही न रहा जग में, तब दर्शन आके दिखाया तो क्या?

आओ प्रभु एक बार दर्शन दे जाओ। बाँके बिहारी। जब प्राण कंठ में आ गये महाराज और उसने अपनी जिद्द नहीं छोड़ी, उसी पत्थर के अन्दर से बाँसुरी बजाते मुस्कुराते भगवान कृष्ण प्रकट हो गये। देवताओं ने पुष्प बरसाये, बाजे बजाये जय जयकार करते हैं। कृतकृत्य हुआ धन्ना जाट। इसप्रकार धन्ना जाट की भक्ति पूरी हुई, यह भावना का चमत्कार है।

*****

कला का सत्य जीवन की परिधि में सौन्दर्य के माध्यम द्वारा व्यक्त अखण्ड सत्य है।

-महादेवी वर्मा